साहित्य अकादेमी और एलबीएसएम कॉलेज द्वारा आयोजित

'कविता उत्सव' में 18 भाषाओं के कवियों ने कविताओं का पाठ किया

- कविता का करुणा से गहरा संबंध है : प्रो. गंगाधर पांडा
- आजादी के 75वें वर्ष में झारखंड में साहित्य अकादमी का आयोजन होना अर्थपूर्ण : जयंत शेखर

जमशेदपुर : 'संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेना दुर्लभ है और मनुष्य जन्म लेकर कवि होना और भी दुर्लभ है. शास्त्रों में कहा गया है कि जो साहित्य, कला और संगीत को प्यार नहीं करता, वह सिंग और पूंछ विहीन पशु के समान होता है. कविता का करुणा से गहरा संबंध है. आदि कवि वाल्मीकि क्रौंच-वध से आहत होकर फूट-फूटकर रोये और उनके मुंह से कविता की पंक्ति निकल गयी. कविता की शुरुआत करुण रस से हुई. वाल्मीकि के रामायण से ही प्रेरित होकर तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखा और दक्षिण भारत में कई रामायण लिखे गये. आज एलबीएसएम कॉलेज के सभागार में साहित्य अकादमी और एलबीएसएम कॉलेज द्वारा आयोजित पूर्वी क्षेत्रीय कविता उत्सव का उद्घाटन करते हुए कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गंगाधर पंडा ने ये विचार व्यक्त किये. उन्होंने इस अवसर पर भगवान जगन्नाथ पर संस्कृत की एक 'अष्टपदी' भी सुनायी.

कविता उत्सव के विशिष्ट अतिथि कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलसचिव जयंत शेखर ने भक्ति कविता की क्षमताओं की चर्चा करते हुए कहा कि आजादी के 75 साल बाद झारखंड में साहित्य अकादमी का आयोजन होना अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है. आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत इस आयोजन का होना भी काफी अर्थपूर्ण है.

इसके पूर्व साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार 'देवेश' ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि किसी भी रचनाकार का सबसे बड़ा सम्मान यही है कि उसकी अभिव्यक्ति को सुना जाए. इस आयोजन का उद्देश्य साहित्य को नई पीढ़ी तक ले जाना है. इसमें 18 भाषाओं के कवि भाग ले रहे हैं. आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादेमी, पूर्वी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक और एलबीएसएम कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अशोक अविचल ने कहा कि कविता नाद ब्रह्म की उपासना है और जो उसकी उपासना करता है वह मानवता के प्रति समर्पित होता है. इस आयोजन में पढ़ी गयी कविताएं हमारी राष्ट्रीय दशा और दिशा को अनुभव करायेंगी.

उद्घाटन सत्र में विभिन्न भाषाओं के आमंत्रित कवियों, उद्घाटनकर्ता और विशिष्ट अतिथि के अतिरिक्त जमशेदपुर के प्रख्यात कथाकार जयनंदन को भी सम्मानित किया गया. हाल में ही जयनंदन को इफको-श्रीलाल शुक्ल सम्मान देने की घोषणा हुई है. उद्घाटन सत्र का संचालन प्रो. विनय कुमार गुप्ता और डॉ. संचिता भुईंमन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मौसुमी पॉल ने किया.

माटी, किसान, पर्यावरण, स्त्री-प्रश्न से संबंधित कविताओं से रूबरू हुए श्रोता

दूसरे सत्र में संताली के साहित्यकार मदन मोहन सोरेन की अध्यक्षता में असमिया के उत्तम कुमार बरदलै, बांग्ला के कमल चक्रवर्ती, बो ने की रश्मि चौधुरी, अंग्रेजी की वसुधारा राय, मैथिली के शिव कुमार टिल्लू, मणिपुरी के एम.ए. हाशिम, नेपाली के राजा पुनियानी, ओडिआ के भाग्यवंत राणा, हो के डोबरो बुड़ीउली ने अपनी कविताओं का पाठ किया. उत्तम कुमार बरदलै महाजागतिक, मन, मस्तिष्क और हृदय तथा राख और मांस शीर्षक कविताओं का पाठ किया.

भाषा अलग हो सकती है, पर वेदना और कविता नहीं : मित्रेश्वर

कविता उत्सव के तीसरे सत्र के अध्यक्ष प्रो. मित्रेश्वर अग्निमित्र ने कहा कि इस आयोजन के जरिये झारखंड में सांस्कृतिक इतिहास का एक पन्ना लिखा जा रहा है. उन्होंने कहा कि वेदना ज्ञान और कविता के लिए जरूरी है. जो कवि नहीं हैं, कविता उनके भीतर भी होती है. उनके भीतर जो अनुभूतियां और भाव हैं, उनको मेहनत करके व्यक्त करना चाहिए. उन्होंने कहा कि भाषा अलग-अलग हो सकती है, पर कविता अलग नहीं होती, वेदना अलग नहीं होती.